पद्मावत में नाथ संप्रदाय का प्रभाव

डॉ. स्वाति मिश्रा,

अतिथि विद्वान,

स्नातकोत्तर एवं षोधसंस्थान,

हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग,

रानी दुर्गावती विष्वविद्यालय, जबलपुर

नाथपंथ की प्राचीनता निर्विवादित है। जो अनादि काल से निरंतर अविरल रूप से सतत प्रवाहमान है। 'नाथ' षब्द का प्रयोग वैदिक काल से ही होता आ रहा है। ऋग्वेद में 'नाथ' षब्द का प्रयोग सृष्टि कर्ता, ज्ञाता तथा सृष्टि के निमित्त रूप में किया गया है। परमयोगाचार्य महायोगी गुरु गोरखनाथ धार्मिक–सांस्कृतिक संधि काल की महान यौगिक विभूति थे। महायोगी गुरु गोरखनाथ की **'गोरखवाणी'** में **'नाथ'** षब्द दो अर्थों में लिया गया है। पहला रचयिता के रूप में तथा दूसरा परमतत्त्व के रूप में। नाथ मार्ग योग प्रधान मार्ग है। जिसके अंतर्गत वे सभी अनुयायी हैं जो नाथ संप्रदाय की मान्यताओं के प्रति अपनी आस्था एवं श्रद्धा की भावना से जीवनयापन करते हैं। इसमें संत एवं गृहस्थ सभी समाहित हैं। नाथ योग मत अपने उद्भव काल में अवतारवाद का समर्थक नहीं था। नाथ योगी सर्वनिरपेक्ष अलक्ष्य सत्ता के समर्थक थे। कालान्तर में नाथपंथियों ने न केवल गोरखनाथ को आदिनाथ षिव के अवतार के रूप में स्वीकार किया वरन् नाथयोग के साधना केन्द्रों एवं सिद्ध पीठों में भगवान् षिव के साथ अन्य देव मूर्तियों की प्रतिष्ठा और उपासना की परम्परा का सूत्रपात्र किया। संकीर्ण साम्प्रदायिक मनोवृत्ति नाथ योगीयों के लिए त्याज्य है वे **'षैव'** और **'वैष्णव'** में कोई भेद नहीं मानते थे। नाथपंथियों की परम्परागत मान्यता के अनुसार महायोगी गुरु गोरखनाथ सर्वकालिक हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि महायोगी गुरु गोरखनाथ का आविर्भाव काल लगभग सातवीं से तेरहवीं षताब्दी के मध्य है। भारत में षंकराचार्य के बाद महायोगी गुरु गोरखनाथ जैसा प्रभावषाली और युग प्रवर्तक व्यक्ति दूसरा नहीं हुआ।

गोरखनाथजी के आविर्भाव काल में वैदिक धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, षैव मत, पाषुपत, कापालिक, कष्मीरी षैव, वीर षैव एवं रसेष्वर मत आदि अनेक धर्मों एवं मतों का प्रचार था। षाक्तमत का एक साधन पंथ वाममार्ग था। इन सभी पंथों या मतों में कालान्तर में विकृतियों का समावेष हो गया था। ऐसे समय में महायोगी गुरु गोरखनाथजी की सारग्राही दृष्टि ने तत्कालीन सभी साधना, सम्प्रदायों के सार्थक एवं उपयोगी अंगों एवं तत्त्वों को संग्रहीभूत कर एक ऐसे योगपरक भक्ति–मार्ग का प्रवर्तन किया जिसमें साधना की पवित्रता, चरित्र की उदात्तता, संयमपूर्ण जीवन के महत्व एवं आडम्बर रहित जीवन षैली का प्रवर्तन किया था। अंधविष्वासों, कुरीतियों, पाखण्डों एवं षोषण के विरुद्ध संघर्ष करने के कारण समाज में तिरस्कृत एवं निम्न जाति के लोगों को भी नाथपंथ ने समाज में सम्मानपूर्ण स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जन–साधारण के लिए इस पंथ का मार्ग सदैव प्रषस्त रहा और यही कारण है कि नाथपंथ लोक भाषा, लोक जीवन एवं लोक संस्कृति से जुड़कर गोरखनाथ ने लोक चेतना का जो संचार मध्यकालीन समाज में किया उसमें आडंबरों से अनुरक्त भक्तों के लिए कोई स्थान नहीं रहा। धार्मिक पाखण्डों एवं कुरीतियों पर नाथपंथ के परमाचार्य महायोगी गुरु गोरखनाथ अपनी वाणी से कठोर प्रहार किए। परिणामस्वरूप समाज में नई चेतना का संचार हुआ। इस प्रकार नाथपंथ ने भक्ति को योग, साधना एवं ध्यान की षुचिता में डुबोकर एक नये भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात किया।

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य पर नाथपंथ की साधना का गहरा प्रभाव पड़ा है। सिद्धों की कविता से लेकर संत साहित्य का जो क्रमिक विकास हुआ है, उसमें नाथ साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है। फिर चाहे वह कबीर का जनभाषा का काव्य हो या सगुण भक्ति काव्य अथवा संत साहित्य का सूफी साहित्य।

सूफियों के भारत में प्रवेष करने के पष्चात उन पर भारतीय योग साधना का और विषेष रूप से नाथपंथ में प्रचलित हठयोग का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी नाथपंथ के सिद्धांतों से विषेष रूप से प्रभावित हुए थे। उनके द्वारा रचित महाकाव्य 'पद्मावत' में स्थान–स्थान पर नाथपंथ का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। जायसी ने नाथ–सम्प्रदाय के हठयोग की क्रियाओं का अनुभूत वर्णन किया है। डॉ. वासुदेवषरण अग्रवाल लिखते हैं– ''हमारा अनुमान है कि सहजयान सिद्धों की परम्परा और नाथयोगियों की परम्परा इन दोनों के सम्पर्क में आकर जायसी ने जीवन में उनका प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया था। उन्होंने दोनों की विषेषताओं को स्वीकार करके अपने काव्य में स्थान दिया।''1 'पद्मावत' में नाथपंथी योगियों का श्रद्धापूर्वक स्मरण किया गया है। योग की महत्ता स्वीकार करते हुए रत्नसेन कहता है–

जौं भल होत राज और भोगू। गोपिचंद नहिं साधत जोगू।।2

भर्तृहरि का नाम भी कवि ने श्रद्धापूर्वक लिया है, जिससे नाथपंथ में उसकी आस्था का पता चलता है और नाथपंथ की लोकप्रियता का भी –

जानौ ओहि गोपिचंद जोगी। को सो आदि भरथरी वियोगी।।3

+++++++

जस भरथरी लागि पिंगला। मो कहँ पद्मावति सिंघला।।4

इतना ही नहीं राजा भर्तृहरि के नाथपंथ में दीक्षित होने की बात भी 'पद्मावत' में स्वीकार की गई है–

राजा भरथरि सुना जो जानी। जेहि के घर सोरह सौ रानी।। कुच लीन्हैं तरवा सहराई। भा जोगी कोउ संग न लाई।। जोगिहि कहा भोग सौं काजू। चहै न धन घरनी और राजू।।5

ये पंक्तियाँ नाथयोग के महत्त्व एवं उसके सहज सिद्धांतो की सूचक है।

राजा भर्तृहरि, जिसे भोग विलास की सारी सामग्री प्राप्त थी, वह भी सब कुछ त्यागकर नाथ योग की साधना में दीक्षित होते चित्रित किया गया है यह तत्कालीन समाज में नाथपंथ के सिद्धांतों के बढ़ते प्रभाव को प्रदर्षित करता है। गुरु गोरखनाथ का नाम भी पद्मावत में कई बार उल्लेखित है। हीरामन जो कि गुरु का प्रतीक है पद्मावती का संदेष रत्नसेन देता है, तब लगता है मानो गोरक्षनाथ का उपदेष हो–

आइ पेमरसा कहा संदेसा। गोरख मिला मिला उपदेसा।।6

इसके अतिरिक्त अन्य स्थान पर गोरखनाथ का नाम इस प्रकार आया है–

परा माति गोरख कर चेला। जिउ तन छाँड़ि सरग कहँ खेला।।7

+++++++

कंथा पहिरि दंड कर गहा। सिद्धि होइ कहँ गोरख कहा।।8

एक अन्य जगह रत्नसेन के सिंघल द्वीप यात्रा प्रसंग में गोरखनाथ की चर्चा करते हुए कवि लिखते हैं–

'तुम्हारे हाथ में गोरखनाथ ने सिद्धि दी है।

गोपिचंद तुई जीता जोगू। औ भरथरी न पूज वियोगू।। गोरख सिद्धि दीन्ह तोहि हाथू।
तारी गुरु मछंदरनाथू।।9

नाथपंथ में गोरखनाथ का महत्त्व आध्यात्मिक दृष्टि से सर्वोपरि है, धार्मिक दृष्टि से गोरखनाथ वहाँ सनातन माने जाते हैं। सिद्ध देह के रूप में योगी सदैव विद्यमान रहता है। नाथपंथ की इसी धारणा को पुष्ट करते हुए जायसी 'पद्मावत' में लिखते है–

बिनु गुरु पंथ न पाइय भूलै सो जो भेंट।
जोगी सिद्ध होइ तब जब गोरख सौं भेंट।।10

'पद्मावती–रत्नसेन–भेंटखंड' में जब पद्मावती को सखियाँ सजाकर रत्नसेन के पास ले जाती हैं तो राजा दिव्य रूप को देखकर मूर्छित हो जाता है, इस पर सखियाँ कहती हैं–

बोलहिं सबद सहेली कान लागि गहि माथ।
गोरख आइ ठाढ़ भा उठु रे चेला नाथ।।11

गोरखनाथ के गुरु मत्स्येन्द्रनाथ का स्मरण जायसी ने इस प्रकार किया है–

लीन्हें सिधि साँसा मन मारा। गुरु मछंदरनाथ संभारा।।12

जायसी ने नौ नाथों तथा चौरासी सिद्धों की भी चर्चा की है। चौरासी सिद्ध सिद्धों के भी हैं और नाथ सम्प्रदाय में भी चौरासी सिद्धों की गणना की जाती है। नवनाथ में– आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ,गाहिणीनाथ, चर्पटनाथ, चौरंगीनाथ, ज्वालेन्द्रनाथ, भर्तृनाथ, गोपीचंदनाथ हैं–

नवौ नाथ चलि आवहिं औ चौरासी सिद्ध।
आजु महाभारत चले, गगन गरुड़ और गिद्ध।।13

नाथ सम्प्रदाय में नाथ का अर्थ मुक्ति प्रदान करने वाला माना गया है। मुक्ति का दान वही कर सकता है, जो स्वयं मुक्त हो। जायसी ने भी 'नाथ' षब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया है–

गुरु हमार तुम राजा, हम चेला तुम नाथ।
जहाँ पाँव गुरु राखै, चेला राखै माथ।।14

जायसी ने योगियों के वेष का अत्यंत आकर्षक चित्रण किया ऐसा माना जाता है कि योगियों का जो वेष आज है वह प्राचीन काल से चला आ रहा है। राजा रत्नसेन ने भी ऐसा ही वेष धारण किया था। हाथ में किंकरी, सिर पर जटा, ष्षरीर पर भस्म, मेखला, श्रृंगी योग को ष्षुद्ध करने वाला धँधारी, चक्र, रूद्राक्ष और आधार (आसन की पीढ़ा), कंधा पहनकर हाथ में सोटा लिया था और गोरख–गोरख की रट लगाता हुआ निकल पड़ा था। उसने कंठ में मुद्रा कान में कुंडल रूद्राक्ष की माला, सिर पर छाता आदि धारण किया था तथा जिस प्रकार नाथ योगी समस्त षरीर में भस्म लगाये रहते हैं, उसी प्रकार की वेषभूषा में रत्नसेन पद्मावती को प्राप्त करने की इच्छा से सिंहल द्वीप के लिए प्रस्थान करने से पूर्व नाथयोगी का रूप धारण करते हैं–

तजा राज, राजा भा जोगी। औ किंगरी कर गहेउ बियोगी।। तन बिसँभर मन बाउर लटा। अरुझा पेम, परी सिर जटा।। चन्द्रबदन और चंदन देहा। भसम चढ़ाइ कीन्ह तन खेहा।। मेखल, सिंघी, चक्र धँधारी। जोगवाट, रुदराछ, अधारी।। कंथा पहिरि दंड कर गहा। सिद्ध होइ कहँ गोरख कहा।। मुद्रा ò वन, कंठ जपमाला। कर उदपान, काँध बघछाला।। पाँवरि पाँव, दीन्ह सिर छाता। खप्पर लीन्ह भेस करि राता।।15

हठयोग में गुरु का महत्त्वपूर्ण स्थान है। गुरु के बिना सिद्धि की प्राप्ति को न केवल असंभव माना गया है वरन, यह भी मान्यता है कि योग्य गुरु के आभाव में साधना पथ पर एक पग भी नहीं बढ़ा जा सकता। जब तक साधक गुरु उपदेष और वचनों को आत्मसात कर उनका चिंतन नहीं करता है, वह परमार्थ का रहस्य समझने में असमर्थ ही रहेगा, और अज्ञान के अंधकार की भूल–भूलैया में भ्रमित होता रहेगा। जो आत्मतत्त्व का साक्षात्कार करना चाहते हैं, वे गुरु की खोज करते हैं, क्योंकि गुरु कृपा के बिना कोई और मार्ग नहीं है जिससे परमार्थ–सिद्धि प्राप्त हो–

गुरु की बाचा षैजै नाहीं, अहंकारी अहंकार करै।
षेजी जीवै षोजि गुरु कौं, अहंकारी का प्यंड परै।।16

गोरखनाथ ने स्पष्ट रूप से कहा है कि ज्ञान के प्रकाष में ही हम षरीर तथा आत्मा के भेद को भलिभाँति समझ सकते है और उसी के फलस्वरूप जीव मोक्ष प्राप्त करते है–

गुरु हमारे अतीत बोलिये। जिनि किया पिंड का उधार।।17

जायसी ने हीरामन को साधक रत्नसेन को गुरु बताया है–

'गुरु सुआ जेहि पंथ देखावा'18

मलिक मोहम्मद जायसी ने यह स्पष्ट किया है कि सद्गुरु ही षिष्य का सच्चा पथप्रदर्षक होता है। नाथपंथियों की इस मान्यता को भी पूर्णतया स्वीकार करते हैं पद्मावत में वे इस सिद्धांत का समर्थन करते हुए कहते हैं कि–

बिन गुरु पंथ न पाइय, भूलै सो जो मेट।
जोगी सिद्ध होइ तब जब गोरख सौं भेंट।।19

नाथपंथ में भगवान् षिव को आदिनाथ स्वीकार किया गया है। जायसी ने भी षिव–पूजन की महत्ता को स्वीकार किया है। उनका कथन है कि षिव देवताओं के पिता हैं और राम ने उनकी कृपा से ही राक्षसराज रावण पर विजय प्राप्त की–

महादेव देवन के पिता। तुम्हरी सरन राम रन जिता।।20

जायसी महादेव की उपासना से इच्छित फल की प्राप्ति होने की बात को स्वीकार करते हैं–

महादेव कर मंडप जग मानुस तहँ आव।
जस हींछा मन जेहि के सो तैसे फल पाव।।21

पद्मावती भी अपने लिये पति प्राप्ति का वरदान महादेव से ही माँगती है–

बरसौ जोगि मोहि मेरवहु कलस जाति हौं मानि।।22

अन्यत्र भी जायसी ने षिव की महत्ता स्वीकार की है। षिव से सिद्धि गुटिका प्राप्त करने के पष्चात ही राजा षक्ति प्राप्त कर गढ़ में प्रवेष करने में सफल होता है–

सिधि गुटिका राजै जब पावा। पुनि भइ सिद्धिगनेस मनावा।।
जब संकर सिधि दीन्ह गुटेका। परी हूल जोगिन्ह गढ़ छेंका।।23

योगियों द्वारा प्रतिपादित पिंड ब्रह्माण्ड की एकता का समर्थन जायसी ने पद्मावत में किया है–

चौदह भुवन जो तर उपराहीं। ते सब मानुङ्ग के घट माहीं।।24

गोरखनाथ की मान्यता है कि कठोर साधना के द्वारा ही जीव कर्ममुक्त होकर षिवत्व की प्राप्ति कर सकता है। 'पद्मावत' में भी जायसी ने षिव बनने के लिए कठोर तपष्चर्या की आवष्यकता पर बल दिया है–

जौं लहि आपु हेराइ न कोई। तौ लहि हेरत पाव न सोई।।25

मरजिया भाव भी इसी के निकट है। साधक जब भौतिक रूप से मर जाता है, तभी साधना के उपयुक्त होता है– मरजिया में मरकर जीने का भाव निहित है–

जस मरजिया समुद धँस, हाथ आव तब सीप।
ढूँढ़ि लेई जौ सरग–दुआरी चढ़ै सो सिंघल दीप।।26

जायसी ने गगन दृष्टि या उल्टी दृष्टि का उल्लेख किया है–

उलटि दिस्टि लाव सो देखा27

उलटि दीठि माया सौं रूठी। पलटि न फिरी जानि कै झूठी।।28

षषिभूषणदास गुप्त ने लिखा है कि– ''नाथ योगियों में 'उल्टा साधन' का बहुत प्रचार था, उसे उजान साधन भी कहा जाता है। चित्त की जो अधोमुखी वृत्तियाँ हैं, उनसे उन्हें हटाकर उद्यान या ऊर्ध्वमार्ग में लगाना उल्टी साधना का लक्षण था। वैष्णव, वाउल और सूफी सभी ने इस परिभाषा को स्वीकार किया।''**29** जायसी ने इसी प्रभाव के कारण पिपीलिका मार्ग की बात कही है–

भेदै जाइ सोइ वह घाटी। जो लहि, भेद चढ़ै होइ चाँटी।।30

प्रतीक योजना– मलिक मोहम्मद जायसी ने अपने काव्य में आध्यात्मिकता का वर्णन काव्य के विभिन्न खंडों में जहाँ–जहाँ किया है वहाँ प्रतीकों के रूप में वही प्रतीक प्रयुक्त किए है जो नाथपंथ में गोरखनाथ एवं उनके षिष्यों द्वारा किए गए हैं। अतः इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि नाथपंथ ने जायसी को प्रभावित किया था तथा जायसी गोरखनाथ के सिद्धांतों से कहीं न कहीं सहमत हैं।

ष्वास–प्रष्वास को वहन करने वाली जिन दो नाड़ियों के मध्य सुषुम्ना स्थित है, उन्हें हठयोगी इड़ा–पिंगला कहते हैं। जायसी ने इन्हें नीर–खीर नामक दो नदियाँ कहा है–

गढ़ पर नीर खीर दुइ नदी। पनिहारी जैसे दुरपदी।।31

जायसी ने सूर्य और चन्द्र प्रतीकों का भी पद्मावत में प्रयोग किया है– ''हठ योगियों की साधना का उद्देष्य होता है चन्द्र–सूर्य, इड़ा–पिंगला, वाम–दक्षिण नाड़ियों को वष में करके सिद्धि प्राप्त करना।'' प्राचीन बंगला लोक गीतों में चन्द्र–सूर्य का अभिप्राय बार–बार आता है–

'चाँद सुरुज राखचे दुई कानेर कुण्डल'

गोरखनाथ ने भी चन्द्र–सूर्य के प्रतीकों का उल्लेख किया है–

जिहि घर पर चन्द सूर नहिं ऊगे, तिहि घर होसि उजियारा।।32

चन्द्र और सूर्य का ही नामान्तर गंगा–यमुना है। इन्हें ही इड़ा और पिंगला कहा जाता है। इस सरस प्रतीकों का भी जायसी ने कौषल से प्रयोग किया है। इन्हें ही जायसी ने धूप–छाँह, रात–दिन, साँवरी–गोरी, गंगा–यमुना कहा है। अपने प्रतीकवाद का और संवर्धन करते हुए इस जोड़ी को ही कवि ने पद्मावती नागमती माना है–

दूनौ सवति साम और गोरी। मरहिं तौ कहँ पावसि असि जोरी।। अस गियान मन आव न कोई। कबहूँ राति, कबहूँ दिन होई।। धूप छाँह दोउ पिय के रंगा। दूनौ मिली रहहि एक संगा।। गंग जमुन तुम दोउ, लिखा मुहम्मद जोग। सेब करहु मिलि दूनौ तो मानहु सुख भोग।।33

नाथपंथ की भाँति जायसी ने भी षरीर के लिए गढ़ प्रतीक का प्रयोग किया है।

गढ़ तस बाँक जैसि तोरि काया। पुरुङ्ड देखु ओही कै छाया।।34

जायसी ने सूफी प्रेम साधना के अन्तर्गत कुण्डलिनी योग की सब परिभाषाओं को अंगीकार किया है। हठयोग साधको द्वारा प्रयुक्त अनेक षब्दों का प्रयोग प्रायः उन्हीं के अर्थ में किया है। षिव षक्ति का मिलन नाथपंथी साधना का अंतिम सोपान है। जिसे उन्होंने कैलाष नाम दिया। जिसे जायसी ने पद्मावत में अनेक स्थानों पर 'कबिलास' की संज्ञा देकर का प्रयुक्त किया है–

जबहि दीन निअरावा जाई। जनु कबिलास निअर भा आई।।35

+++++++

सात खण्ड ऊपर कबिलासू। जहँ सोव नारि सेज सुख बासू।।36

उसका मूल प्रेरणा–स्रोत हठयोग साधना ही है। कहीं–कहीं जायसी ने स्वर्ग के अर्थ में भी 'कबिलास' का प्रयोग किया है–

बरनौ राज मंदिर रनिवासू। अछरिन्ह भरा जानु कबिलासू।।37

+++++++

कंचन बिरिख एक तेहि पासा। जस कल्पतरु इन्द्र कबिलासा।।38

नाथपंथ में कुण्डलिनी योग साधना के अंतर्गत नौ चक्रों की चर्चा की गयी है। 'पद्मावत' में भी जायसी ने लिखा है–

नव पौरी बाँकी नव खंडा। नवौ जो चढ़ै जाइ बरम्हंडा।।39

नौ पौरी षरीर के नौ द्वार हैं, जिनका उल्लेख अथर्ववेद में 'अष्टचक्रा नव द्वारा देवानां पूरयोध्य' के द्वारा हुआ है। जायसी ने इन नौ द्वारों की कल्पना को षरीरस्थ चक्रों के साथ मिला दिया है और नौ खण्डों को

एक साथ सम्बन्धित करके एक–एक खण्ड को एक–एक द्वार कहा है। 'सिंहल द्वीप वर्णन खण्ड' में ही जायसी लिखते हैं–

नवौं खण्ड नव पौरी औ तहं बज्र केवार।
चारि बसेरे जो चढ़ै सत सौ उतरै पार।।40

यहाँ जायसी ने सूफी साधना के चार सोपानों और हठयोग की चक्रसाधना का समन्वय किया है– नाथ सम्प्रदाय में नौ चक्रों के बाद ब्रह्मरंध्र की कल्पना की गयी है और उसे दसवाँ द्वार कहा गया है। गोरखनाथ ने ब्रह्मरंध्र को ही दसवाँ द्वार कहा है, जहाँ षिव का साक्षात्कार संभव है। 53 इस दसवें द्वार की चर्चा जायसी ने भी की है–

नवौं पँवरि पर दसौं दुआरा। तेहि पर बाज राज घरियारा।।41

+++++++

दसवँ दुआर गुपुत एक ताका। अगम चढ़ाव बाट सुठि बाँका।।42

''मध्यकालीन युग में इस दसवें द्वार का उल्लेख बहुत बार आया है। कहा जाता है कि सहस्त्रार का अमृत इसी दषम द्वार में नीचे होकर झरता रहता है। सुषुम्ना जिस मार्ग से ब्रह्माण्ड या मस्तक में प्रवेष करती है, वहीं दसवाँ द्वार है।''43 जायसी ने 'घरियार' बजने का उल्लेख किया है, यह ब्रह्मरंध्र से सुनायी पड़ने वाला अनाहत नाद है।

'पद्मावती रत्नसेन भेंट खण्ड' में भी योग के स्वरूप को देखा जा सकता है, जहाँ पद्मावती रत्नसेन से कहती है–

ऐसे राजकंवर नहि मानौं। खेलु सारि पासा तब जानौं।।44

इसका एक अर्थ यह भी है, 'योग में तुम इड़ा पिंगला को मिला सको तो समझूँगी कि तुम कुण्डलिनी या सुषुम्ना से सान्निध्य प्राप्त कर चुके हो।'45

इस प्रकार जायसी ने पद्मावत में नाथपंथी साधना का अपने ढंग से उल्लेख किया है जो संपूर्ण महाकाव्य में परिलक्षित होता है। 'पद्मावत' में नाथपंथ में स्वीकृत गुरु की महत्ता, पिण्ड ब्रह्माण्ड की एकता, विपरीतकारिणी मुद्रा साधना (उलटा साधन, अजान साधन) षिवषक्ति का सामरस्य नाड़ी साधना, चक्र साधना,काम साधना आदि उल्लेख करते हुए उसके महत्त्व को स्वीकार किया गया है। इसके अतिरिक्त नाथपंथ मे स्वीकृत चन्द्र सूर्य प्रतीकों की चर्चा की गयी है। इतना ही नहीं, योग को महत्त्व देने के लिए जायसी ने नाथ सम्प्रदाय के प्रमुख योगियों तथा नाथ योगियों की वेषभूषा का भी उल्लेख किया गया है। प्रेम के लिए योग को आवष्यक माना है।

ओहि पथ जाइ जो होई उदासी। जोगी जती तपा संन्यासी।।
भोग किये जौं पावत भोगू। तजि सो भोग कोइ करत न जोगू।।46

असल में सूफी साधना पर नाथपंथ का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। सूफी साधना का जब भारत में प्रवेष हुआ तो यहाँ प्रचलित भारतीय साधना पद्धतियों ने उसे विभिन्न रूपों में प्रभावित किया। ये प्रभाव पद्मावत में भी सयास रूप से समाहित नहीं किए गए हैं वरन् भारतीय परिवेष एवं संस्कारों के प्रभाव के कारण सहजता से ही समावेषित हो गए हैं।

जायसी ने 'पद्मावती रत्नसेन भेंट खण्ड' में योग साधना तथा योगियों के लिए कटु षब्दों का प्रयोग किया है। पद्मावती रत्नसेन से कहती है–

हौं रानी तू जोग भिखारी। जोगिहि भोगिहि कौन चिन्हारी।।
जोगी सबै छंद अस खेला। तू भिखारी केहि माहँ अकेला।।47

+++++++

जोगि भिखारी करसि बहु बाता। कहेसि रंग देखौं नहिं राता।।48
जोगिन्ह बहुतै छंद औराहीं। बुँद सेवातिहि जैस पराहीं।।49
जोगी भँवर न थिर ये दोऊ। केहि आपन भए कहै सो कोऊ।।50

तासौं नेह जो पिइ करै थिर आछहि सहदेस।

जोगी भँवर भिखारी इन्हतें दूर अदेस।।51

एक ओर जायसी नाथपंथ के प्रभाव को ग्रहण करते हैं, प्रेम मार्ग में सफलता प्राप्त करने के लिए योगमार्ग को आवष्यक समझते हैं, फिर योगी की आलोचना क्यों करते हैं? यह एक प्रष्न है। वस्तुतः जायसी की साधना सूफी साधना है और सूफी साधना में प्रेम साधना को महत्त्व दिया गया है। जायसी ने योग मार्ग पर प्रेम की प्रतिष्ठा की है। योगमार्ग को उतना ही स्थान दिया है जितना वह प्रेम साधना में सहायक होता है। बहुत सी बातों में उन दिनों योगियों और सूफियों में साम्य था, दोनों में अन्तर साधना के रूप में था। योगी प्राणायाम, ध्यान, धारणा, समाधि द्वारा ब्रह्म साक्षात्कार के समर्थक थे, और सूफी अनन्य प्रेमनिष्ठा के पक्षधर थे। जायसी

ने रत्नसेन को योगियों के समान साधक बताते हुए सूफी साधना का सच्चा उपासक और सौन्दर्योपासक चित्रित किया है। रत्नसेन योग मार्ग को ग्रहण करता है, तो पद्मावती के लिए। जायसी प्रेम साधना पर अधिक बल देते हैं और उसमें भी विरह साधना पर–

मुहम्मद चिनगी प्रेम की सुनि महि गगन डेराइ।

धनि विरही और धनि हिया जहँ अस अगिनि समाइ।।52

इस प्रकार अन्य साधना पद्धतियों के जो–जो तत्त्व जायसी को मान्य हैं, केवल उन्हीं का ग्रहण हुआ है। पद्मावत में नाथ योग साधना पर विचार करते समय यह बात अवष्य ध्यान में रहनी चाहिए और इसी रूप में उसके प्रभाव का आकलन भी करना चाहिए।

संदर्भ

1. पद्मावत (संजीवनी भाष्य) प्राक्कथन, पृ. 74.
2. वही, पार्वती महेष खण्ड 1/3.
3. पद्मावत, जोगी खण्ड 4/6.
4. वही, वसंत खण्ड 10/6.
5. वही, जोगी खण्ड 6/4–6.
6. पद्मावती, सुधा भेंट खण्ड 8/2.
7. पद्मावती, वसंत खण्ड 11/6.
8. वही, जोगी खण्ड 0/5.
9. वही, सिंहलद्वीप खण्ड 1/2–3.
10. वही, पार्वती महेष खण्ड /6.
11. पद्मावती, रत्नसेन भेंट खण्ड /14.
12. वही, राजा गढ़ छेका खण्ड 21/3.
13. पद्मावती, रत्नसेन सूली खण्ड /8.
14. वही, बोहित खण्ड /2.
15. वही, जोगी खण्ड 0/1–7.
16. गोरख बानी– 151.
17. वही, पृ. 202.
18. पद्मावत/उपसंहार.
19. वही, पार्वती महेष खण्ड/6.

20.वही, पार्वती महेष खण्ड 4/6.

21.सिंहल द्वीप खण्ड.

22.वसंत खण्ड–1.

23.राजागढ़ छेंका खण्ड 0–1/2.

24.पद्मावत, उपसंहार.

25.पद्मावत, प्रेम खण्ड 5/2.

26. वही, पार्वती महेष खण्ड 1.

27.वही, पार्वती महेष खण्ड 9/1.

28.वही, प्रेम खण्ड 6/4.

29.षषिभूषणदास गुप्त अल्पज्ञात धार्मिक सम्प्रदाय, पृ. 265–66.

30.पद्मावत, पार्वती महेष खण्ड 8/5.

31. सिंहल द्वीप वर्णन खण्ड 18/4–5.

32.वही, 18/1.

33.उद्धृत, वासुदेवषरण अग्रवाल, पद्मावत, पृ.59.

34.गोरखवानी 48.

35.पद्मावत, पार्वती महेष खण्ड 4/1.

36.वही, सिंहल द्वीप वर्णन खण्ड 2/1.

37.वही, पद्मावती रत्नसेन भेंट खण्ड 0/1.

38.वही, सिंहलद्वीप वर्णन खण्ड 24/1.

39. वही, 18/4.

40.वही, 18/5.

41.गोरखवानी 135.

42.पद्मावत, सिंहलद्वीप वर्णन खण्ड 17/1.

43.वही, पार्वती महेष खण्ड 8/4.

44.पद्मावत (वासुदेवषरण अग्रवाल) प्राक्कथन,

45.पद्मावती रत्नसेन भेंट, 22/1.

46.वही, पृ.368–69.

47.पद्मावत, प्रेम खण्ड 4/5–6.

48.पद्मावत, पद्मावती रत्नसेन भेंट खण्ड, 15/2–3.

49.वही, 17/1.

50.वही, 19/1.

51.वही, 19/5.

52.राजा रत्नसेन सती खण्ड /7.